INTERNATIONAL JOURNAL OF ECONOMIC SOCIAL SCIENCE AND MANAGEMENT LAW
Peer Reviewed, Referred & Indexed Journal
E-ISSN: 3070-0558
VOL.7, NO.1 (2026)

प्रेमचन्द के उपन्यास में नीहित समस्याएँ ।

दिलीपभाई जे. वसावा
आसिस्टन्ट प्रोफेसर,
ऐम. बी. पटेल कोलेज ओफ एज्युकेशन,
सरदार पटेल युनिवर्सिटी, वल्लभ विद्यानगर
dilipvasava4meet@gmail.com

मुंशी प्रेमचन्द हिन्दी एवं उर्दू के लेखक के रूप में पहचाने जाते हैं, उनका जन्म ३१ जूलाई १९८० में वारासणी के निकट लमही नामक गाँव में हुआ था। उनका जीवन काफी संघर्षमय रहा। उन्होंने कहानी एवं उपन्यास दोनों विद्याओं में साधिकार लिखा है। उन्होंने यथार्थवादी चित्रण ही पेश किया है। मुझे यहाँ प्रेमचन्द के समस्यामूलक उपन्यासों को ही उजागर करना है, इसीलिए सीधे ही इस विषय की ओर जा रहे हूँ और उनके महत्त्वपूर्ण उपन्यासों में कौन समस्याएँ हैं और कैसी समस्या को लेकर पूरा उपन्यास लिखा गया, इन्हीं बातों के साथ चर्चा होगी ।

साहित्य समाज का दर्पण है और साहित्यकार एक ऐसा प्रकाश पुंज है, जो भ्रान्ति- तिमिर को चीरकर स्पष्ट दिशा का निर्देश करता है। इस शताब्दी के आरम्भ में हिन्दी साहित्य को एक ऐसा साहित्यकार मिला जिसने शोषित और पाड़ितों के अन्तर में कुलबुलाती भावनाओं को वाणी दी तथा अपने साहित्य के माध्यम से सामाजिक कुरीतियों और शोषण के विरूद्ध एक ऐसा आन्दोलन छेड़ा जो आज भी हमारे समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता है। वह साहित्यकार थे, कथा-सम्राट मुंर्श प्रेमचन्द ।

मुंशी प्रेमचन्द का साहित्य आज भी उतना ही सामयिक, प्रासंगिक तथा सटीक है, जितना उनके जीवन-काल में था, बल्कि ऐसा लगता है, वह आज भी हमारी राष्ट्रीय समस्याओं का एक सच्चा दर्पण है।

प्रेमचन्द की लेखनी को ही यह श्रेय प्राप्त है कि हिन्दी साहित्य में पहली बार वे किसान-नायक बने, जो दिन-रात खेतों में खून-पसीना एक करके और बर्फीली रातों में दाँत किटकिटाते हुए आँधी-पानी से जूझने के बावजूद अपनी फसल लाश की तरह सूदखोरों के हाथों उठते देखकर मन मसोस कर रह जाते हैं।

प्रेमचन्द जी ने अपनी कलम से समाज के एक-एक विषय को लिखने का प्रयास किया है। प्रेमचन्द जी ने सब शोषित-पीड़ितों का ऐसा चित्रण अपनी सशक्त लेखनी से किया है कि पाठक के रोंगटे खड़े हो जाते हैं। उसमें शत-शत सच्चाई झाँकती है । पाठक को दर्द की पीड़ा की सच्ची एवं साक्षात् अनुभूति होती है। प्रेमचन्द जी ने ग्रामीणवातावरण और मानवीय स्वभाव का इतनी सूक्ष्मता से यथार्थ चित्रण किया है कि घटनाएँ चाहें काल्पनिक हो, परन्तु बिल्कुल यथार्थ ही लगती हैं। वास्तव में प्रेमचन्द जी दीन-दुःखियों के प्रबल हिमायती और हमारे लोक जीवन के सशक्त चितेरे रहे हैं। धार्मिक और सामाजिक ढकोसलों का जिस प्रकार उन्होंने भण्डा फोड़ दिया दिया, वह उनके उस समय की समस्याओं का साहस दिखाता है।

उन्होंने सदियों से सामाजिक विषयमता से पीड़ित भूमिहीन मजदूरों की हिमायत में बहुत कुछ लिखा है। तत्कालीन किसान एवं मजदूरों की समस्याओं को भी उभारा है। कहीं - कहीं 'मंत्र जैसी कहानी के द्वारा अछूत वृद्ध द्वारा तत्कालीन हिन्दुओं के पाखण्ड का पर्दाफाश किया है। साम्प्रदायिक दंगों की समस्याकी बात 'कायाकल्प' के द्वारा बताते हैं।

अपनी रचनाओं में विधवा-विवाह का केवल समर्थन ही नहीं किया, बल्कि एक विधवा से विवाह करके समाज के सामने एक आदर्श भी प्रस्तुत किया। वेश्यावृत्ति की समस्या भी अपनी कहानी एवं उपन्यासों में की है। 'सेवासदन' में यही बात उभारते हैं। दहेज प्रथा, अनमेल विवाह, शोषक एवं शोषित की व्यथा, किसानों की व्यथा. बेरोजगारी की, मध्यमवर्गीय परिवार की, भिक्षावृत्ति, आर्थिक शोषण, सामाजिक असमानता, अस्पृश्यता आदि अनेक समस्याओं की ओर प्रेमचन्द जी न गाँधीवादी विचारों से प्रभावित एवं प्रेरित होकर जन सामान्य, एवं गाँव के अन्तिम मनुष्य तक की व्यथा का निरूपण किया है।

उनके जो प्रमुख उपन्यास रहे हैं, वह सारे समस्या से प्रेरित रहे हैं, कुछ न कुछ समस्याएँ भरी पड़ी हैं, उनकी कथा देखें, चरित्र, संवाद शैली आदि अनेक मुद्दों से समस्या का चित्रण झलकता है। प्रेमचन्द ने ३०० से अधिक कहानियाँ एवं एक दर्जन से अधिक उपन्यास लिखे हैं। उनके महत्त्वपूर्ण उपन्यासों की ओर संक्षिप्त में समस्या को केन्द्र में रखकर चर्चा करूँगा ।

प्रेमचन्द ने अपने उपन्यासों में तत्कालीन भारत के प्रायः सभी वर्गों की सभी प्रकार की समस्याएँ उठायी हैं। मध्यमवर्ग एवं निम्नवर्ग अपने समस्त परिवारों के साथ अंकित हुए हैं। उच्चवर्ग भी काफी मात्रा में आया है। प्रेमचन्द ने स्वयं भोगा था। वे जानते थक् िक गरीबी क्या होती है, दुःख क्या होता है, संघर्ष क्या होता है, अनुभव की आँख ने उनके कथा-साहित्य

को सच्चाई एवं प्रखरता प्रदान की है। वे सामाजिक संघर्ष के योद्धा थे, इसीलिए मध्यमवर्ग और निम्नवर्ग की समस्त पीड़ाओं में उभरती उनकी मानवीय ज्योति के दर्शन होते हैं। अपनी यथार्थवादी दृष्टि से वे समस्याओं के असली स्वरूप को पहचान लेते थे, उनके समाधान में वे आदर्शवदी हो उठते थे, यह दूसरी बात थी ।

अब क्रमशः एक-एक उपन्यास को समस्या की दृष्टि से मूल्यांकन की दृष्टि से देखते ।

सेवासदन : (१९१६) की समस्या मध्यमवर्ग सम्बन्धित है। इसमें वेश्या जीवन को एक सामाजिक सन्दर्भ में देखा गया है। वेश्या पुरुष के लिए एक लुभावनी चीज रही है, परन्तु यथार्थवादी कलाकार ने उस लुभावनी चीज के नीचे छिपी नारी-जीवन की गहनतम पीड़ा, अवमानना को उद्‌घाटित कर मूल कारणों पर प्रकाश डाला है। जो हमारे मध्यमवर्गीय स्त्री-समाज को वेश्या बनने के लिए विवश कर देते हैं। लेखक ने हमारे पुरुष-समाज के रंग-विंगी नकाब पहने हुए तमाम धार्मिक, राजनीतिक, सामाजिक पुण्य- पुरुषों को भरी सड़क पर नंगा कर दिया है।

प्रेमाश्रम : (१९२१) तत्कालीन समाज के दूसरे सत्य को लेकर चला है। यह सच है कि किसानों का जीवन, किसानों और जमीदारों के आपसी सम्बन्धों ने किसानों के जीवन में अनेक प्रकार की समस्याएँ पैदा कर दी थीं। सच पूछिए तो इन सारी समस्याओं के मूल में भी आर्थिक विषमता ही रही थी। जमींदारी प्रता ने भूमि का ऐसा असंतुलित विभाजन कर दिया था कि किसी के पास हजारों बीधा खेत हैं और कोई खेतहीन है। इन विषमताओं के कारण ही समाज में एक दीवार खड़ी होती है। इस उपन्यास में जमीदारों के अत्याचारों के साथ पुलिस वालों का जुल्म, रक्षा के नाम पर तैनात अफसरों और उनके अधीनस्थ कर्मचारियों के अन्धेर आदि का चित्रण मिलता है। अतः यह उपन्यास भी समस्या से घिरा हुआ है।

रंगभूमि : (१९२५) राष्ट्रीय उपन्यास है। इसमें विराट मंच पर एक ही बहुआयामी परिस्थितियों और चेतना को उपस्थित किया गया है। राष्ट्रीय स्तर पर तत्कालीन भारत की अनेक राजनीतिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक समस्याएँ थीं । 'रंगभूमि' में वे सारी समस्याएँ प्रेमचन्द ने उठाई हैं। 'रंगभूमि' के केन्द्र में पांडेपुर गाँव है। इस गाँव के माध्यम से मुख्य समस्या उभरती है- औद्योगीकरण की। गाँव का केन्द्रवर्ती पात्र सूरदास है, जो स्वभावतः पूरे उपन्यास का नायक बन गया है। ज्ञानसेवक अपने कारखाने के सिलसिले में उस गाँव को खाली कराकर हथियाना चाहता है और सूरदास इसका विरोध करता है । यही केन्द्रबिन्दु पूरे उपन्यासे में संघर्ष बनकर छा जाता है और अन्य राष्ट्रीय समस्याएँ इससे जुड़कर एक

बहुआयामी यथार्थ की सृष्टि करती है। पूँजीवाद सारे सम्बन्धों को पैसे के सन्दर्भ में ही देखता है।

ज्ञानसेवक सूरदास की जमीन लेने के लिए अपना तर्क रखता है 'यहाँ एक कारखाना खोलूँगा, जिससे देश और राजनीतिक की उन्नति होगी, गरीबों का उपकार होगा, हजारों आदमियों को रोटियाँ मिलेंगी। इसका भी यश तुम्हीं को होगा ।' अतः इसमें भी इस बड़ी समस्या को लेकर उपन्यास रचा है।

निर्मला : (१९२७) में दहेज और अनमेल विवाह की समस्या उठाई है। अर्थाभाव से निर्मला की शादी बूढ़े से कर दी जाती है। हमारे समाज का यह एक जाना-पहचाना परिदृश्य है। यह घटना कितनों की जिन्दगी बरबाद करती है। आर्थिक विषमता, सामाजिक विषमता की जड़ है। वह सम्बन्धों और मूल्यों को भी तोड़ती है। बाप, बेटे के प्रति ईषालु हो जाता हैं, चोरी करने लगते हैं। कितनी ही सपनों भरी जिन्दगियाँ तबाह हो जाती हैं। प्रेमबन्द ने उस सामाजिक समस्या के बीच निर्मला को उपस्थित कर उसकी मानसिकता का अच्छा उद्घाटन किया है, साथ ही तोताराम के माध्यम से मध्यमवर्गीय व्यक्ति की विसंगतियों का, उसका कथनी और करनी के बीच के फासले का, उसकी उपाहास्पद नकली ताकतों का भी उद्घाटन किया है।

गवन : (१९३०) मध्यमवर्गीय जीवन के यथार्थ को व्यक्त करनेवाला सशक्त उपन्यास है। मध्यमवर्गीय जीवन की विसंगतियाँ और मनोवैज्ञानिक सत्य का बड़ा ही तीखा बोध उसके द्वारा व्यक्त हुआ है। रमानाथ मध्यमवर्गीय युवकों का प्रतिनिधि है। मध्यमवर्ग के युवक की रंगीन आकांक्षाओं का उसकी आर्थिक कमजोरियों और व्यक्तिगत असमर्थताओं के साथ भीर्षण संघर्ष दिखाया गया है। कहा जा सकता है कि 'गबन' मनोवैज्ञानिक छबि से भरपूर उपन्यास है। रमानाथ जैसे सामान्य पात्र को लेकर अन्तर्द्वन्द्व का जो मार्मिक अंकन प्रेमचन्द 'गबन' में कर सके हैं, वह उनके अन्य उपन्यासों में उपलब्ध नहीं होता । अन्तर्द्वन्द्र सामान्य पात्र में ही अधिक होता है। रमानाथ मध्यमवर्गीय युवक की समस्त सामाजिक और मानसिक स्थितियोंका प्रतिनिधि होने के नाते संकल्प- विकल्प का युग है। उसका व्यक्तित्व कमजोर किन्तु सजीवन है। मध्यमवर्गीय युवक समाज में अपनी झूठी प्रतिष्ठा कायम करने के लिए बाहर तो अभिनय करता ही है, अपने घर में भी अभिनय करता है। वह प्रेम को भी उसके मूल में नहीं पकड़ता, प्रेम को हृदय व्यापार न मानकर चमक-दमक का व्यापार मानता है। इसीलिए रमानाथ अपनी पत्नी के सामने अपने वास्तविक रूप को खोलता नहीं। समझता है कि उसके प्रति जालपा का

प्रेम उसके रुपये-पैसे, शान-शौकत से जुड़ा है। वह डरता है कि सही वास्तविकता खुल जाने पर जालपा का प्रेम उसके लिए कम हो जाएगा। इसलिए वह सच्चाई का सहारा न लेकर रंगीन फरेब रचता है और वह स्वयं धीरे-धीरे उसमें उलझता जाता है। इसमें राजनीतिक और सामाजिक समस्याओं का स्थान-स्थान पर अच्छा उद्‌घाटन हुआ है। प्रेमचन्द मूलतः सामाजिक समस्याओं के उपन्यासकार हैं और 'गबन' भी इसका अपवाद नहीं है। किन्तु मूल सौन्दर्य उसके मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की शक्ति में है।

कर्मभूमि : (१९३२) उपन्यास भी बहुआयामी है। इसमें राजनीतिक चेतना के मूल स्वर गूँथ दिए गए हैं। अमरकान्त एक समाज सेवक है। वह समाज-सेवा के ऊपरी रूप से होता हुआ बुनियादी रूप तक पहुँच जाता है। वह जाने-अजाने चमारों के गाँव में पहुँच जाता है और वह जैसे पहचान जाता है कि सेवा के प्रथम हकदार वे ही हैं और सेवा का अर्थ केवल सामाजिक भेदभाव दूर करना नहीं है, बल्कि उन्हें आर्थिक शोषण से मुक्ति दिलाना है। और यही सेवा राजनीतिक रूप ले लेती है और सत्ता से टकराती है। वह गाँव एक महन्त साहब की जींदारी में आता है। महन्त साहब (जो धर्म के भी रक्षक माने जाते हैं) बहुत बड़े शोषक हैं और उनके शोषण को संरक्षण मिलत है सरकार से । प्रेमचन्द गाँधीजी की तरह अहिंसावादी आन्दोलन के समर्थक । इस राजनीतिक आन्दोलन के साथ-साथ अमरकान्त के अपने शहर में उसकी पत्नी सुखदा, डॉ. शान्तिकुमार आदि के नेतृत्व में अछूतोद्धार का सामाजिक आन्दोलन चलता है। वह आन्दोलन सामाजिक व्यवस्था से तो लड़ता ही है अन्ततोगत्वा सरकारी ताकत से भी टकराता है और उसमें भाग लेने वाले लोग गिरफतार होकर उसी जेल में आते हैं जिसमें अमरकान्त भी है। कहींन कहीं सभी समस्याओं के केन्द्रबिन्दु में है अर्थ की समस्या, जिसकी पहचान हुए बिना कोई समाज की संरचना को ढंग से पहचानने का दावा नहीं कर सकता ।

गोदान : (१९३६) प्रेमचन्द जी का ही नहीं, हिन्दी का श्रेष्ठ यथार्थवादी उपन्यास है। 'गोदान' की कथा का केन्द्र है होरी नामक किसान का जीवन होरी अपने समय के गुण, दोष, अभाव और शक्ति के साथ भारत का सच्चा किसान है। उसकी एक छोटी सी आकांक्षा है कि उसके यहाँ एक गाय आए। वह भोला के यहाँ से गाय प्राप्त करता है किन्तु अपनी आकांक्षा के बदले

भोला की एक दूसरी आकांक्षा पूर्ति के मूल्य पर । वह अघेड़ भोला की शादी कराने का वादा करता है। इस गाय का मूल्य है एक जीवित स्त्री- गाय की कुरबानी । गाय को देखकर पूरे गाँव के हृदय में ईर्ष्या का भाव आ जाता है। होरी का सबसे छोटा भाई हीरा चुपके से गाय को जहर दे देता है। जहर देता है कौन, अभिशाप झेलता है कौन? गाय की संदिग्ध मृत्यु की सूचना पाकर थानेदार आता है। सिंगुरीसिंह होरी को समझाते हैं कि, इसे कुछ दे दिलाकर मामला टाल। और झिंगुरी होरी को झट से तीस रुपऐ दे देते हैं। किन्तु धनिया आकर सारा खेल बिगाड़ देती है।

गाँव की शोषक शक्तियों के मन में एक नई गाँठ बंध जाती है। सभी बदला लेने को सोचते हैं। अतः उपन्यास के अन्ततोगत्वा होरी की व्यथा, पूरा संघर्षमय जीवन-गाथा से कई बातें उभरती हैं। किसान देश और समाज में अर्थ-उत्पादन का मूल साधन है। किसान को घेरने वाली शक्तियाँ है जमींदार, अफसर, पटवारी गाँव का साहूकार, पुरोहित, पुलिस और विडम्बना यह है कि ये सारी शक्तियाँ किसान के साथ अपना आर्थिक सम्बन्ध भी रखती हैं। प्रेमचन्द ने भारतीय किसान को बहुत विश्वस्त रूप से उभारा है किन्तु यह किसान कोई रूप स्वरूप प्राप्त या ठहरा हुआ किसान नहीं है बल्कि यह नए युग-सन्दर्भ में बदल रहा है। उस बदलाव, उस संक्रान्ति की पहचान भी गोदान में बहुत गहराई से व्यंजित हुई है। होरी अपने जीवन के अंतिम दिनों में किसानी छोड़कर मजदूर बन जाता है। होरी का बेटा गोबर गाँव छोड़कर शहर जाता है कमाने के लिए । वह भी मजदूर बनकर रह जाता है। विस्थापित किसान मजदूर के रूप में उपस्थित हो रहा है-किसान की यह नई पीढ़ी मजदूर के रूप में उपस्थित हो रही है किसान की यह नई पीढ़ी मजदूर होकर अधिक निश्चिन्त, निर्भीक, समजदार, उम्र और धर्म के आंतक से मुक्त होती जा रही है। वह आर्थिक सम्बन्धों को अधिक सफाई से समझ रही है। इसे धरम-करम की चासनी में नहीं पिधला सकते। इसलिए ह अपने अधिकारों को अधिक समझी है तथा शोषकों के शोषण को दया-सहायता के रूप में न लेकर शोषण के रूप में ही लेती है।

अतः उपरोक्त रूप से प्रेमचन्द के सभी उपन्यासों के केन्द्र में समस्या तो है ही, प्रेमचन्द ने अपने सभी उपन्यासों में किसी न किसी समस्या को दृष्टिगत किया है। आज उन पर और उनके साहित्य पर विश्व के उस विशाल जन समूह को गर्व है, जो साम्राज्यवाद, पूँजीवाद और सामंतवाद के साथ संघर्ष में जुटा है- आज भी बहुत सारी समस्याओं के हल प्रेमचन्द के

साहित्य में से मिल सकते हैं। जमीन से जुड़े प्रेमचन्द और उनका साहित्य कालजयी है, यह हम निश्चित रूप से कह सकते हैं।

संदर्भ सूचि

- प्रेमचन्द गोदान
- प्रेमचन्द निर्मला
- प्रेमचन्द गवन